बेटे - हाँ माताजी हमें भी माफ कर दो तुम्हें पिताजी [illegible] सताती थी तुमने बहुत परेशान नहीं की। हमें भी माफ कर दो।

बहू - मुझे भी माफ कर दो [illegible] मैंने भी बहुत तंग किया तुमको। [illegible] तुमने [illegible] परन्तु तुमने जरा भी नहीं [illegible]। मुझे भी माफ कर दो।

बहू - आप लोग [illegible] मत [illegible] मैं कौन होती हूँ माफ करने वाली। मगर आपको भी [illegible] रहना है [illegible] जो मैं जिन नियमों का पालन करती आप भी उन नियमों का पालन करें।

जो हम मनुष्य पर्याय में [illegible] हैं [illegible]। और हमारे तो [illegible] का उदय था। जो हमें [illegible] पर्याय [illegible] कुल व [illegible] धर्म में जन्म मिला। और अब [illegible] करते [illegible] ये तो [illegible] बात नहीं है।

बहू - सही बात है माताजी अब हमें माफ कर दो।

दादी (माताजी) - [illegible] मतलब ये है कि आप लोग भी [illegible] के नियमों का पालन करें।

[illegible] - हमें तो उन नियमों का पता नहीं है।

- तो कोई बात नहीं मैं बताती हूँ।

[illegible] तक [illegible]

[illegible] जायेगा।

जिन में भोजन [illegible] नियम [illegible] जायेगा।"

---

(4)

हाँ भी हमें [illegible] के सच्चे जैनी के नियमों को पालन करना अनिवार्य है।

- दिन में भोजन करना
- छान कर पानी पीना
- नित्य देव दर्शन करना

ये सब सच्चे जैन के लक्षण हैं।

और हम सब भी इन नियमों का पालन करके सच्चे जैनी के लक्षणों को [illegible] करके अब जीवन को [illegible] से बचाएँ। व सच्चे धर्म की सच्चे गुरु की [illegible] की पूजा करें। ऐसी हमारी भावना है।

और हमें [illegible] है कि आप लोग [illegible] धर्म को स्वीकारना चाहते हैं।

[illegible] [सेठ की तरह [illegible]]

और आप सभी भी [illegible] धर्म को समझें [illegible] के नियमों का पालन करें ऐसी [illegible] भावना [illegible] है।

जय जिनेन्द्र

[ब्र० संकेत जैन शास्त्री
[illegible] सागर (म.प्र.)
09815429143]

---

(3)

[नाटक दृश्य]

[सभी भोजन [illegible] कर रहे हैं [illegible] बाहर [illegible] है [illegible] है।]

बेटा - [illegible] दादी - दादी

दादी - क्या हुआ बेटा क्या हुआ?

[illegible]

बेटा - दादी [illegible] मेरे [illegible] में [illegible]?

दादी - तो क्या हुआ [illegible] भोजन [illegible] लो।

बेटा - नहीं दादी नहीं मैं तो भोजन नहीं करूँगा, ये तो [illegible] है।

दादी - [illegible] तुमको [illegible] कि [illegible] क्या? [illegible] भी [illegible] भोजन है, और [illegible] भोजन [illegible] नहीं है। और [illegible] भोजन हम [illegible] ही करेंगे। तुमको [illegible] तो [illegible]।

दूसरा बेटा - नहीं दादी हम ये भोजन नहीं करेंगे। [illegible] भोजन करने से हम बीमार हो सकते हैं [illegible]। हम भी ये भोजन नहीं करेंगे।

[illegible] - [illegible] हम भी ये भोजन नहीं करेंगे।

[illegible] बहू - हाँ [illegible] है। [illegible] भी डॉक्टर के पास गई थी तो उन्होंने भी [illegible] कि [illegible] भोजन [illegible] के [illegible] पहले ही कर लेना चाहिए। क्योंकि [illegible] हम भोजन करते [illegible] तो हमारा भोजन पच नहीं [illegible] और हमें [illegible] बीमारियाँ

और [illegible] भी [illegible] है कि [illegible] में भोजन नहीं करना चाहिए।

बड़ी बहू - [illegible] ये [illegible] भोजन [illegible] सभी [illegible] है।

[illegible] कहते हैं [illegible]

भैया -> [illegible] (माताजी) [illegible]। परन्तु [illegible] कितना [illegible] किया। [illegible] भोजन [illegible] नहीं [illegible]।

कितना [illegible] उनके [illegible] बहुत [illegible]।

[illegible] - [illegible] क्या करें?

भैया - [illegible] उनसे [illegible] उनको [illegible] [illegible] पालन [illegible]।

बड़ी बहू - [illegible]

[illegible]

[पहला दृश्य]

[illegible] आवाज [illegible] है।

[illegible], माताजी [illegible]

[illegible] - [illegible] है क्या।

[illegible] - [illegible] माफ कर दो हमने [illegible] कितना [illegible] तुमको [illegible] भी नहीं [illegible] / हमें माफ कर दो।

[illegible]

तो [illegible] क्या [illegible] मेरी [illegible]
[illegible] छोटी [illegible] है [illegible]
(दूध [illegible] जाती है)
[illegible] छोड़ [illegible]
[illegible] बोलती तो [illegible]
[illegible] कहाँ पहुँच ?
[illegible]
हाँ नहीं, उसका मतलब क्या [illegible] है
दीदी आप तो मुझसे इतनी [illegible] है
[illegible] आप [illegible] में पैदा हुई है [illegible] का मतलब
नहीं पता ?
[illegible] मुझे [illegible] है [illegible]
उपदेश देना बन्द कर।
छोटी बहू [illegible] है
[illegible] बड़ी बहू [illegible])
[illegible] चली
[illegible] रही है ...
[illegible]
[illegible] है [illegible]
है ?
[illegible] मंदिर नहीं [illegible]
जा रही है। [illegible] मंदिर [illegible]
[illegible] नहीं [illegible]
[illegible] पसन्द [illegible]
हाँ [illegible] मैं तो [illegible]
[illegible]

[दृश्य]

[illegible] दूध [illegible] छोटी
बहू को [illegible] रही थी।
[illegible] हमारा दिमाग
[illegible] कर दिया [illegible]
[illegible] है तो [illegible] है [illegible]

SHOT ON REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

[illegible] Life [illegible]

[इतने में बड़ी बहू आती है तो छोटी
बड़ी - अरे क्या हुआ [illegible]
[illegible] रही हो।
महरी - [illegible]
बड़ी - [illegible]
महरी - कुछ मत पूछो, [illegible]
[illegible]
[इतने में [illegible] (छोटी) आती है
[illegible] ......]
[लो [illegible] महरानी ......]
[अभी कोने से [illegible] कुर्सी पर बैठी
[illegible] बोलती है]
[illegible] 2 [illegible]
छोटी - जी माँ जी [illegible] ?
[illegible] है, और [illegible]
बहू [illegible] बोलती है [illegible]
[illegible])
[illegible] - [illegible]
[illegible] ये क्या ? सिर्फ [illegible]
[illegible] है क्या [illegible]
[illegible] ?
[illegible] - [illegible] आपको तो सिर्फ [illegible]
[illegible]
[illegible] - ये क्या तुम्हारी [illegible] नहीं है
[illegible] है [illegible]
[illegible] है, तुमको [illegible] कुछ
[illegible] नहीं क्या ?
छोटी - [illegible] दीदी [illegible] भी ? [illegible]
[illegible] घर [illegible]
[illegible] हो।
माँ - तो [illegible]
[illegible] है [illegible]
[illegible] दहेज [illegible] कम [illegible]
और ऊपर से [illegible]
[illegible] निकाल दी
[illegible] है
[illegible]
[illegible] मेरा ?
[गुस्से से [illegible]]

सच्चा फैन कौन ?......

(1)

[illegible]

[और [illegible]
[illegible]]

[प्रथम दृश्य]

[[illegible] बहू रसोई घर में काम कर
रही है। इतने में छोटी बहू के हाथ
से दूध का [illegible] गिर जाता है।]
दूध गिरता है।

[पात्र परिचय]

1. 2 बहू (बीन)
2. [illegible]
3. बेटा
4. [illegible] बेटा/बेटी

[illegible] बहू -
बड़ी बहू - क्या हुआ
छोटी बहू - कुछ नहीं दीदी, मेरे हाथ से
दूध गिर गया।
[illegible] बहू - [illegible] दूध गिर गया, [illegible]
[illegible] के [illegible] तो [illegible] Fridge (टेड) [illegible]
होगी।
छोटी - [illegible] करूँ।
[illegible] बड़ी - [illegible] क्या करें, [illegible] और दूध [illegible]
छोटी - जी [illegible] है। [[illegible] जाती है]

[दूसरा दृश्य]

[दूसरी बहू रसोई में काम कर रही है, [illegible] बेटा [illegible]
है]
बेटा - ([illegible] है) माँ मैं मुझे भूख लगी है।
माँ - अरे मेरा Red [illegible] Cake [illegible]
[illegible] खायेगा [illegible] खायेगा [illegible] खायेगा [illegible]
बेटा - [illegible] कुछ नहीं [illegible]
माँ - [illegible] हट, तू तो [illegible] है [illegible] खायेगा।
[illegible] कुछ [illegible] है। ([illegible] है)

[तीसरा दृश्य)
बड़ी बहू रसोई में काम कर रही है। (छोटी बहू आती है, [illegible]
बड़ी बहू बोलती है]
बड़ी - ले आई दूध
छोटी - जी दीदी, [illegible] में भी रख दिया [illegible]

तीर्थधाम मङ्गलायतन

धार्मिक पहेलियाँ

१. आतम ध्याना-आतम ध्याना,
आतम में रम जाना आतम ध्याना।
अष्ट कर्म की धनी घटा हो, रहता ये मस्ताना
— स्वभाव सम्यक्दृष्टि

२. तीन अक्षर का मेरा नाम अन्त कटे तो मैं ही राज हूँ।
मुझमें लोकालोक झलकते मैं हूँ अनन्त सुखों का धाम।।
— सर्वज्ञ

३. एक अक्षर का मेरा नाम मैं हूँ परम प्रभु का धाम।
सब जन करते मेरा ध्यान पूरे जिनागम का है सार।। — ॐ

४. दो अक्षर का मेरा नाम ऊँचा हूँ मैं हूँ के धाम।
काम-धाम में हूँ बेकाम सिद्ध शिला है मेरा धाम।। — सिद्ध

५. एक मनुष्य ऐसा देखा खाता है न पीता है।
लाखों वर्षों तक जीता है अमृत भी नहीं पीता है।।
— अरहन्त

६. चार अक्षर का मेरा नाम मुझको क्या दुनिया से काम।
ज्ञान-ध्यान का बस व्यापार मुक्ति पाने को तैयार।
दिखने में लगता कंगाल फिर भी मैं हूँ मालामाल।।
— मुनिराज

७. चार अक्षर का मेरा नाम पानी नहीं पर गंगा नाम।
हर क्षण में चेतन का नाम जीव नहीं पर जड़ का काम।
जो भी मेरा आश्रय लेगा वह बन जाता है भगवान।।
— जैनवाणी

८. दो अक्षर का मेरा नाम बिना कमाये ही आराम।
नाम अमर है दूजा मेरा अमृत पीने का है काम।
फिर भी मैं मर जाता इक दिन, इससे मैं होता हैरान।।
— देव

९. चार अक्षर का मेरा नाम चेतन से मुझको क्या काम।
मुझसे निर्मित हुआ है तन, सारे जग में मेरा धाम।।
— पुद्गल

१०. दो अक्षर का मेरा नाम दो द्रव्यों के आता काम।
चलती दुनिया अपनी गति से फिर भी आता है मेरा नाम।।
— धर्मद्रव्य

११. तीन अक्षर का मेरा नाम पूरे लोक में मेरा धाम।
सारी दुनिया चलकर रुकती दुनिया कहती मेरा काम।।
— अधर्मद्रव्य

१२. तीन अक्षर का मेरा नाम, आता हूँ रहने के काम।
मुझसे बड़ा न जग में कोई, नाम बताओ मेरा कोई।
— आकाशद्रव्य

१३. दो अक्षर का मेरा नाम, स्थिर रहकर भी चलता हूँ।
आता सब द्रव्यों के काम, बोलो जल्दी मेरा नाम।।
— कालद्रव्य

१४. दो अक्षर का मेरा नाम, पाँच भाइयों का है धाम।
मुझको जो अपनाता है, वह नरकों में जाता है।। — पाप

१५. तीन अक्षर का मेरा नाम चारों गति में मेरा धाम।
उलटी श्रद्धा मेरा काम मुझसे सारा जग हैरान।।
— मिथ्यात्व

१६. जो जीवों को दुःख देता है वह मुझको धारण करता है।
राग-द्वेष हैं मेरे भाई मुझसे यह दुनिया घबराई।।
— हिंसा

१७. सत्य रूप से मैं विपरीत अज्ञानी से मेरी प्रीत।
मैं ले जाता नरकों बीच मुझमें हैं पापों की कीच।। — झूठ

१८. सब लोगों का माल हड़पता सबको पहुँचाता मैं जेल।
सबकी बदनामी करवाता बतलाओ यह कैसा खेल।।
— चोरी

१९. मुझे रखोगे रुपया-पैसा बोलो मेरा रूप है कैसा।
तृष्णा देवी मेरी माता तीन लोक की सम्पत्ति खाता।।
— परिग्रह

२०. पाँच अक्षर का मेरा नाम शुद्धात्म का मुझमें धाम।
कुन्दकुन्द का मुझमें नाम बोलो बच्चो मेरा नाम।।
—समयसार

२१. चार अक्षर का मेरा नाम छह खण्डों में मेरा धाम।
दूर्लभ में छप रह जाता मुझको पाते दौलतराम।
— छहढाला

२२. मैं सब को करा कर दुःख देती सबकी सुख शान्ति हर लेती।
मैं हूँ आकुलता की माता, मेरा नाम किसे है आता।।
— कषाय

२३. जिसके सिर पर मैं हूँ आता उसके होठ, भुजा फड़काता।
जो मुझमें अन्धा हो जाता छोटा-बड़ा न उसे सुहाता।।
— क्रोध

२४. मेरा मस्तक सबसे ऊँचा बोलो बच्चो मेरा नाम।
मैं रावण को नरक ले गया सब लोगों में मेरा नाम।। — मान

२५. मुस्काती सूरत है मेरी मनमोहक है मूरत मेरी।
मैं सारे जग को ठगती हूँ दो अक्षर से बना करती हूँ।।
— माया

२६. छह अक्षर का मेरा नाम सबको मुक्तिमार्ग बताता।
कितना सुन्दर मेरा काम — दिव्यध्वनि

— प्रस्तुति : पण्डित अशोक लुहाड़िया, तीर्थधाम मङ्गलायतन

अक्षरों का वह अमरदीप है ... का अनमोल।
करे प्रकाशक मोक्षमार्ग को इष्टोपदेश का ... नाम।।
— भक्तामर, प्रवचनसार, मोक्षमार्ग प्रकाशक, इष्टोपदेश

SHOT ON REDMI NOTE 5 PRO
DUAL CAMERA

छहढाला

छहढाला

M P

छन्दपूर्ति राउंड

3/2 3/2

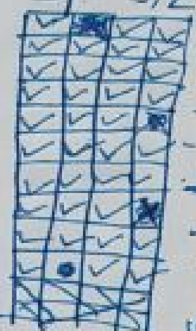

1 अति पुण्य उदय मम आया
2 पावन मेरे नयन भये तुम दरशतें
3 इस अर्घ्य का क्या मूल्य है
शुचि निरमल नीरं गंध सु अक्षत
शास्त्रोक्त विधि पूजा महोत्सव
4 आतम को हित है सुख सो सुख
वसु द्रव्य सँवारी तुम ढिंग धारी
5 तीन भुवन में सार
6 मंगलं भगवान् वीरो
7 मंगलमय मंगलकरण
8 प्रभु पतित पावन मैं अपावन
यः शान्तराग रुचिभिः
यह अर्घ्य समर्पण करके प्रभु
9 कार्तिक फाल्गुन साढ़ में
10 उदक-चन्दन-तन्दुल पुष्पकैः
जल फल आठों शुचि सार
11 मैं कौन हूँ आया कहाँ से
12 तास भ्रमण की है बहु कथा
13 अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र महिता
14 राजा राणा छत्रपति
15 श्रेयस्कर आत्मिक संभव अभिनंदन
16 समाकित दर्शन ज्ञान
17 देव पूजा गुरुपास्ति
18 सत्य प्रतीति अवस्था
19 संयम कोश इन्द्र जहाँ
20 नमः श्री वर्धमानाय
21 पुद्गल नभ धर्म अधर्म काल

5 x 10
50 50
4846

1. कोटि जन्म तप तपैं ... — ज्ञान
2. दान समाज गज बाज ...
3. पुण्य पाप फल माहिं ... — सामायिक प्रो. भो.
4. धार उर समताभाव ...
5. बारह व्रत के अतीचार ...
6. इन चिन्तत सम सुख जागे ...
7. जो भाव मोह तैं न्यारे ... — धर्म भाव-
8. सम्यक् प्रकार निरोध मन वच काय ... — गुप्ति/
9. समता सम्हारैं थुति उचारैं ...
10. अरि मित्र महल मसान कंचन ... — राग द्वेष
11. जीव अजीव तत्त्व अरु आस्रव ... — व्यवहार स
12 परद्रव्यनतें भिन्न आपमें ... — निश्चय स
13 बालपने में ज्ञान न लह्यो
14 कभी अकाम निर्जरा करै ... — भव
15 तीन लोक को नाथ सु आप ...
16 तास भ्रमण की है बहु कथा ...
17 निज काल पाय विधि झरना ... — नि
18 पिता भूप वा मातुल नृप जो ... — मद
X कुगुरु कुदेव कुवृष सेवक की ... — छह अ
3
19 प्रथम नरक विन ... — महिमा स. द.
20 दोषरहित गुणसहित सुधी जे ... — अनु
के

18
20

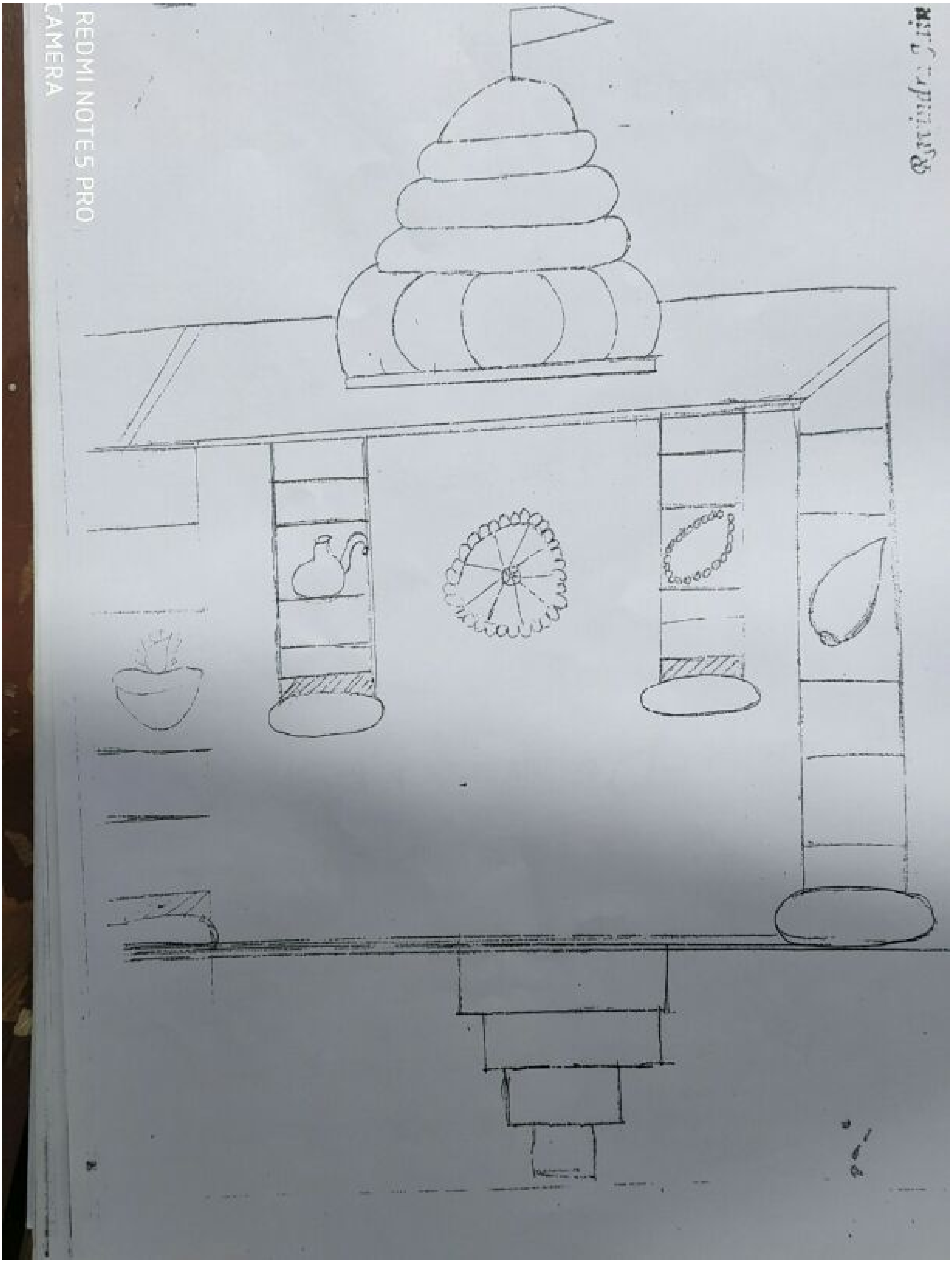
Ravindra Jain

अन्तरात्मा

सभी प्रश्नों के उत्तर 'अ, आ' से दें

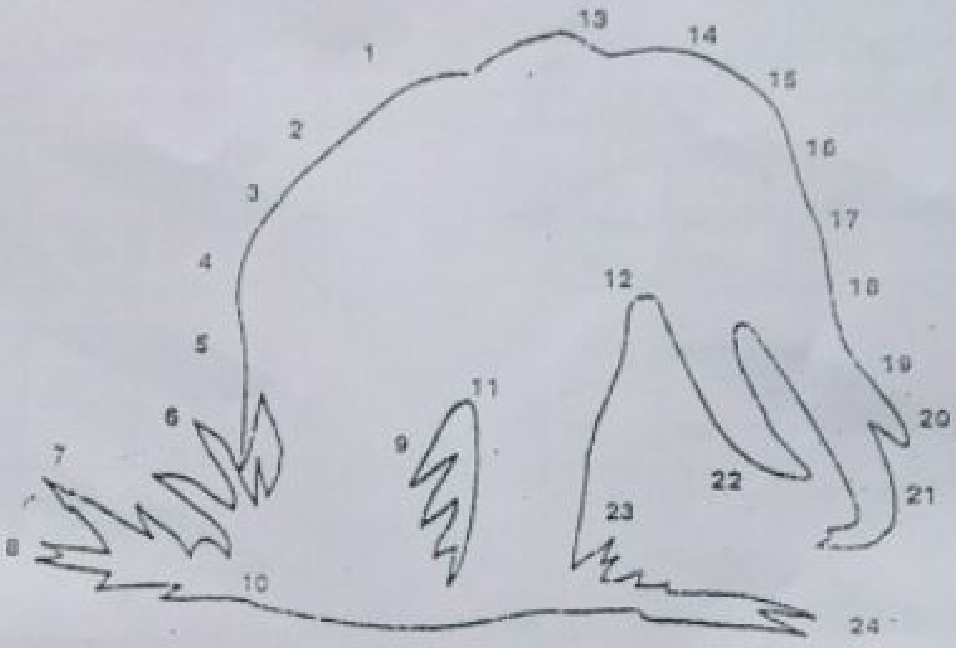

प्र.1. इस युग के धर्म के प्रथम प्रचारक कौन थे ?

प्र.2. प्रथमानुयोग का एक महाग्रंथ ?

प्र.3. किंचित मात्र भी परिग्रह संग्रह न करना ?

प्र.4. जिन्होंने चार घातिया कर्म नष्ट कर दिये वह ?

प्र.5. जो संघ के नायक होते हैं ?

प्र.6. बारह तपों में एक तप ?

[redacted]

प्र.8. जो जीव कभी मोक्ष नहीं पा सकता ?

प्र.9. पाँचों पापों का एक देश त्याग करना ?

प्र.10. दूसरों की वस्तु बिना आज्ञा के ग्रहण नहीं करना ?

प्र.11. भूतकाल के तेईसवें तीर्थंकर का नाम ?

प्र.12. भविष्यकाल के बारहवें तीर्थंकर का नाम ?

प्र.13. कैकई कौन सी विद्या में निपुण थी ?

प्र.14. आदिनाथ के भी पहले मोक्ष गये ?

प्र.15. वे मुनिराज जिन्होंने छह माह तक देवी से शास्त्रार्थ किया ?

प्र.16. दशरथ की एक रानी का नाम ?

प्र.17. चार दानों में एक का नाम ?

प्र.18. पाँचवें नरक का नाम ?

प्र.19. जो देव आपस में लड़ाते हैं ?

प्र.20. पंचमेरू में एक का नाम ?

प्र.21. तेरहवें स्वर्ग का नाम ?

प्र.22. आठवीं प्रतिमा का नाम ?

प्र.23. भरत जी को कितने समय में कैवल्य ज्ञान हुआ ?

प्र.24. कर्मों के आने के द्वार को कहते हैं ?

नाम .... पिता का नाम .... उम्र ....

पता .... दूरभाष ....

[1 Round]

Round

→ 4 → 5 → 7 → 12 → 14 → सिद्ध → अंत

मरे — पहिली ग्रंथ चक्र आचार्य भोजन

गुणस्थान - (4)

1 मुनि संघ के नायक को क्या कहते है? — आचार्य
2 रावण ने कौन-सा पर्वत उठाया था? — कैलाश
3. मारीच के पिता का नाम क्या था? — भरत

4 जटायु पक्षी के कान में णमोकार मंत्र किसने सुनाया था? — राम
5. किस ज्ञान किसे कहते है / लोक में उत्तम वस्तु क्या है? — केवलज्ञान
6. तत्त्वार्थसूत्र का दूसरा नाम क्या है? — मोक्षशास्त्र

7 सोलहवे तीर्थंकर का नाम क्या है? — शान्तिनाथ
8. समवशरण की रचना कौन-सी गुणस्थान में होती है? — 13वे
9 आ. समन्तभद्र को कौन-सा रोग हुआ था? — भस्मकव्याधि

10 भ. महावीर के मुख्य गणधर का नाम? — गौतमगणधर
11 जिनके 25 मूलगुण होते है? — उपाध्याय
12 8 वे बलभद्र का नाम क्या है? — राम

13 ऐसे तीर्थंकर जिनके दो से अधिक नाम है? — महावीर
14 णमोकार मंत्र के अविनय से कौन नरक गया था? — सुभौम चक्रवर्ती
15 श्मशान में कौन जन्मा था? — जीवंधर

16 वे कौन थे जिन्हें स्वर्ग की देवी का नृत्य देखकर वैराग्य हुआ था? — ऋषभदेव
17 सम्यग्दर्शन के कितने अंग है? — 8
18 दर्शनोपयोग के कितने भेद है? — 4

19 तीर्थंकर को सर्वप्रथम इक्षुरस का आहार किसने दिया था? — राजा श्रेयांस
20 363 मत किसने चलाए थे? — मारीची
21 प्राण कितने होते है? — 8

1 त्रिलोकीनाथ
2 जलक्रीड़ा
3 विला
4 तपस्या

क्षमावाणी पर्व

1. क्षमावाणी पर्व क्यों?

दसलक्षण पर्व में आयी विशुद्धि के कारण, पुराने गलत प्रसंगो को भूलने के लिए।

2. क्षमावाणी पर्व वर्ष में कितनी बार और क्यों?

वर्ष में 3 बार। दशलक्षण के बाद। ताकि कषाय अनंतानुबंधी न बन जाये।

3. कैसे मनाये-

जिनके साथ दूरी बन गई है, उस दूरी को समाप्त करें।

स्वयं आगे आयें। अन्य की चिन्ता न करके अपनी आत्म विशुद्धि करें।

4. आजकल कैसे मनाई जाती है-

सब स्थानों पर अलग अलग तरीका। पर वास्तविकता का अभाव । कार्ड छपाकर डाल देते हैं, क्लर्क का जॉब जो पत्र आते हैं उनको भी देखने की फुर्सत नहीं, मात्र गैट अप देख लेते हैं। क्षमा मांगने के समय, जिनसे मांगना उनसे नहीं मांगते। सब कोरम पूरा किया जाता है। आगे का ढंग श्रेष्ठ था। यह तो विश्व मैत्री का पर्व है। बिना शर्त क्षमा मांगनी चाहिये।

5. क्षमा के उदाहरण-

- रफी अहमद किदवई- मित्र ने शादी पर नहीं बुलाया। बिना निमंत्रण पहुँच गये।
- तिरुवल्लुवर- कपड़े फाड़ना।
- सिंहोदर को वज्रकर्ण ने क्षमा किया था।
- काशी का राजा दीर्घायु, ब्रह्मदत्त ने हराया, गर्भ के बालक को क्षमा।
- [illegible] अगंधन सर्प- राजकुमार को काटा, मरना मंजूर पर जहर नहीं चूसा।

6.
- क्षमा जब है जब बुरा, बुरा सा लगने लगे।
- क्रोध करना अर्थात् किसी की गलती की सजा अपने को देना।
- [illegible] ....।
- अचेतनमिदं दृश्यमदृश्यं चेतनं ततः।
  क्व रुष्यामि, क्व तुष्यामि, मध्यस्थोऽहं भवाम्यतः।
- [illegible] पूरन किये खोटे रहे क्यों नहिं जोगरा।
- उत्तम क्षमा जहां मन होई, अंतर बाहिर शत्रु न कोई।
- क्षमा रूपी चिंतामणि रहती जिसके पास।
  तीन लोक की सम्पदा, बनती है फिर दास।
- क्षमावाणी पर्व पर सब मन की घुण्डी खोल दो।
  एक बार सब प्रेम से, भगवान् की जय बोल दो॥

उत्तम तप

1. प्रस्तावना - संसार में दो तरह के मार्ग

1. साधन सम्पन्न सुख सुविधा का मार्ग। परलोक में दुःखदायी है, पाप बंध का कारण है।
2. स्वतन्त्र स्वाधीन साधना तपश्चर्या का मार्ग। स्वर्ग और मोक्ष का देने वाला है।

- दोनों मार्गों में साधना का मार्ग श्रेष्ठ है। श्रेष्ठता शुद्धता और पूज्यता हमेशा तपकर प्राप्त की जाती है।
- सुवर्ण अग्नि में तपकर ही शुद्ध होता है।

-अग्नि के भेद-घर की, ज्वराग्नि, कामाग्नि, क्रोधाग्नि, दावाग्नि, बड़वाग्नि, जठराग्नि पर यह है तपाग्नि।

-मिट्टी अग्नि में तपकर मंगलमय कलश बनती है।

-आटा, घी तथा शक्कर हो, पर अग्नि से तपा नहीं तो हलुवा नहीं बनता।

2. आज तक तप न धारण करने का कारण-

(1) हमारी अज्ञानता - तप की उपादेयता का ज्ञान न होना।
(2) हमारा अविश्वास - तप से निर्जरा या मोक्ष होता है।
(3) हमारी प्रवृत्ति - हमें तप दुःखकारी प्रतीत होता है।

- मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।

3. तप की परिभाषा-

इह पर लोय सुहाणं णिरवेक्खो जो करेदि सम भावो।
विविहं काय किलेसं, तव धम्मो णिम्मलो तस्स॥ - का. अनु.

"कर्म क्षयार्थं तप्यते इति तपः" - सर्वार्थसिद्धि

"इच्छा निरोधस्तपः" अपने मन को मोड़ना, मरोड़ना, नियन्त्रण, कन्ट्रोल करना है।

4. तप का प्रयोजन-

"कर्म क्षयार्थं तप्यते इति तपः" - सर्वार्थसिद्धि , "तपसा निर्जरा च" - तत्त्वार्थ सूत्र

1. वर या इच्छापूर्ति के लिए नहीं - जैसे रावण ने विद्या सिद्ध करने के लिये तप किया था।
2. मान, सम्मान प्राप्त करने के लिए नहीं - जैसे आजकल कोई दशलक्षण व्रत आदि करते हैं, पर धर्मध्यान नहीं क
3. प्रशंसा प्राप्त करने के लिए नहीं।
4. लाभ के लिए नहीं। इससे कुछ मिलता नहीं, गंदगी साफ होती है।

5. तप से लाभ -

कर्मनाश, ऋद्धियों की प्राप्ति, स्वर्ग व मोक्ष सुख की प्राप्ति, 63 शलाका पुरुष बनना, तीर्थंकर बनना आदि।

- मोक्ष की राह तप के बिना सम्भव नहीं। आज तक जो भी मोक्ष गये हैं, तप से ही मोक्ष गये हैं, "यह तन पाय महातप कीजे
- तपस्वी के दर्शन नहीं आचरण पकड़ने चाहिए। शरीर का उपभोग नहीं, सही उपयोग करें।

6. तप के भेद- तप के दो भेद हैं- (1) बहिरंग (2) अन्तरंग

बहिरंग तप -

(1) अनशन-चा. चक्रवर्ती आचार्य शान्तिसागर महाराज ने 35 साल के दीक्षा काल में 9938 उपवास किये। मुनि नेमिसागर जी ने भी 11000 उपवास किये। It is feast for the soul and fast for the body.
(2) ऊनोदर-सागर में पूज्य मुनि श्री प्रमाण सागर जी ने 3 दिन तक एक अंजुलि पानी ही लिया।
(3) वृत्तिपरिसंख्यान-चा. चक्र. आ. शान्तिसागर महाराज ने सर्दी में गीले कपड़े पहनकर पड़गाहन होने की, हाथ में जेवर लेकर पड़गाहन की विधि ली।
(4) रस परित्याग-सोम-हरी, मंगल-मीठा, बुध-घी, गुरु-दूध, शुक्र-दही, शनि-तेल, रवि-नमक का त्याग। आचार्य श्री विद्यासागर जी ने फिरोजाबाद चातुर्मास में पूरे 4 माह छहों रस का त्याग रखा।
(5) विविक्त शैय्यासन - सेठ सुदर्शन गृहस्थ अवस्था में भी नग्न होकर श्मशान में ध्यान करते थे।
(6) कायक्लेश - अनंतवीर्य मुनिराज ने पैर के जलने पर भी नहीं हटाया। पू. आचार्य श्री फिरोजाबाद में 72 घंटे खड़े रहे

प्रसंग

तप न करने से हानि -

उत्तम सत्य

1. परिभाषा- परसंतापयकारण, वयणं मोत्तूण सपरहिदवयणं।
जो वददि भिक्खु तुरियो, तस्स दु धम्मो हवे सच्चं॥- बारसाणुवेक्खा
सत्सु प्रशस्तेषु जनेषु साधु वचनं सत्यम् इति उच्यते।- सर्वार्थसिद्धि

2. सत्य के चार रूप-
1. सत्य महाव्रत- जिनके लेश मृषा। राग द्वेष, मोह से रहित, अन्य पीड़ा कारक न हो,
ऐसे आगमानुसार वचन बोलना, सत्य महाव्रत है। मू. आ.
2. सत्याणुव्रत- परवधकार कठोर निंद्य नहीं वचन उच्चारें।
स्थूलमलीकं न वदति, न परान् वादयति सत्यमपि विपदे।
यत्तद्वदन्ति सन्तः स्थूल मृषावाद वैरमणम्॥ - रत्नकरण्डक श्रावकाचार
3. भाषा समिति- जग सुहित कर सब अहित हर।
4. वचन गुप्ति- सम्यक् प्रकार निरोध.......... (मौन धारण करना)

3. सत्यव्रत की पाँच भावना- क्रोधलोभभीरुत्वहास्यप्रत्याख्यानान्यनुवीचिभाषणं च पञ्च। - तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय 7
4. सत्यव्रत के पाँच अतिचार- मिथ्योपदेशरहोभ्याख्यानकूटलेखक्रियान्यासापहारसाकारमन्त्रभेदाः। - तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय 7
5. सत्य वचन क्या- • अहितकारी सत्य भी असत्य है तथा हितकारी असत्य भी सत्य है। अवसर देखकर उचित बोलना चाहि
• कटु उपदेश भी असत्य नहीं, हितकारी है। शब्दों का सदुपयोग सत्य है। शब्द वर्गणा दुर्लभ है।
6. असत्य वचन- • असदभिधानमनृतम्। अकल्याणकर वचन बोलना।
7. असत्य के भेद-
1. मौजूद वस्तु को मना करना।
2. गैरमौजूद को हाँ करना।
3. कुछ का कुछ कहना।
4. गर्हित वचन बोलना। (चुगलीरूप, हास्यरूप, कठोर, मिथ्याश्रद्धान युक्त, बकवाद रूप, शास्त्र विरुद्ध, ...
पापयुक्त) अप्रिय वचन बोलना। (अप्रीतिकर, भयकार, खेदकार, बैर शोक कलहकार, संताप ...

8. असत्य से हानि- • अविश्वास, डर, अपयश, कलह, शोक, खेद आदि।
9. क्या करें- • गृहस्थ को सावद्य वचनों का त्याग वर्जित है, अतः शेष का त्याग करें। मुनिराज संपूर्ण रूप से त्याग ...
10. निश्चय सत्यधर्म-
• सारा संसार इन्द्रजाल है, कोई सगा नहीं, सब झूठा नाता है।
• एगो मे सासदो आदा, णाण दंसण लक्खणो। सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोग लक्खणा॥
• वपुर्गृह धन दारा पुत्राः मित्राणि शत्रवः। सर्वथान्यस्वभावानि, मूढः स्वानि प्रपद्यते॥
• पण्णाए घित्तव्वो जो चेदा सो अहं तु णिच्छयदो। अवसेसा जे भावा, ते मज्झ परेत्ति णादव्वा॥
• न संति बाह्या मम केचनार्था, भवामि तेषां न कदाचनाहम्।
इत्थं विनिश्चित्य विमुच्य बाह्यं, स्वस्थः सदा त्वं भव भद्र मुक्त्यै॥
• रूप तुम्हारा सबसे न्यारा, भेद ज्ञान करना। जौलों पौरुष थके न तौलों, उद्यम सों चरना॥

उदाहरण-
• आर्यिका विशुद्धमति जी ने फंड के कागजों में दस्तखत नहीं किये।
• गुजरात का व्यक्ति, गुस्से में कम्पलेंट मारने से पत्नि की मृत्यु, स्वयं ने रिपोर्ट लिखाई, सजा पाई।
एडवर्ड सप्तम की राजगादी पर छोड़ा गया, सत्यवादी होने से कई एजेन्सियां मिल गई।
• लड़के की बलि बदले में उतना सोना। सच तो यह है।
• लोहा खरीदा, सोना निकला, मूर्ति बनवा दी, प्रशस्ति उसी की लिखाई।
• जम्बू प्रसाद जी ने वायसराय को शिकार के लिये हाथी नहीं दिया।
• दयानंद सरस्वती अमेरिका में 50 % नहीं समझता, ~~सब मानता 50 %~~ समझते हैं, सब गुरु।
• राणा का सामंत रघुपति सिंह, छुपकर घर आया, पकड़ा गया, सच बोला, छोड़ दिया।

1. कोहुप्पत्तिस्स पुणो बहिरंगं जदि हवेदि सक्खादं।
ण कुणदि किंचि वि कोहं तस्स खमा होदि धम्मोत्ति॥ - बारसाणुवेक्खा
2. क्रोधोत्पत्ति निमित्तानां सन्निधाने सति कालुष्याभावः क्षमा।
3. सत्यपि प्रतिकार सामर्थ्ये अपकार सहनं क्षमा।
4. पूजाकोटि समं स्तोत्रं, स्तोत्रकोटि समं जपः।
जपकोटि समं ध्यानं, ध्यानकोटि समा क्षमा॥

- क्षमा अर्थात् सहिष्णुता, समता, सौजन्य, पृथ्वी, वृक्ष।
- क्षमा के होने पर ही अन्य गुणों की सार्थकता है। क्षमा की नींव पर ही अन्य धर्मों की इमारत खड़ी हुई है।

2. क्रोध के कारण- अन्तरंग कारण क्रोध कषाय का उदय, बहिरंग कारण अनेक हो सकते हैं।
यथा- 1 - इच्छापूर्ति का न होना 2- मनचाहा न होना, रुचि भेद, हठाग्रह, चिन्तन भेद, गलतफहमी (क्षमा करने वाले को कमजोर समझना)
3- आकांक्षाओं की पूर्ति न होना 4- अपेक्षा को क्षति पहुँचना 5- मानसिक अस्तव्यस्तता
6- अस्वस्थता 7- भोजन का सात्विक न शक्तिवर्धक होना 8- अहंकार का होना

3. क्रोध से हानियाँ-
1- धर्मनाश हो जाता है 2- शरीर नाश हो जाता है 3- प्राणों का घात हो जाता है (द्वीपायन मुनि)
4- आपसी रिश्ते टूट जाते हैं 5- कोई क्रोधी को पसंद नहीं करता है 6- विवेक नष्ट हो जाता है (राजा ने तोते को मार

4. क्रोध नियन्त्रण के उपाय-
1- तत्त्वज्ञान 2- चिंतन धारा को बदलें 3- परिस्थिति का सही-सही विश्लेषण 4- उत्तर विलंब से देना सीखें
5- वैराग्य 6- क्षेत्र का त्याग करें 7- उल्टी गिनती करें 8- पानी पी लें
9- मौन हो जायें 10- प्यार से बोलना शुरू करें 11- क्रोध से सजग हो जायें 12- क्रोध को बैर न बनने दें।

5. क्रोध के 4 भेद- शिला, अस्थि, दारू, बेल के समान।
[illegible] क्रोध सब पापों एवं पापों की जड़ है, अतः मैं [illegible] क्षमा की ही होती है। [illegible]

6. क्षमा के उदाहरण-
1- मुनियों की क्षमा
- धौलपुर में आचार्य शान्तिसागर ने नगर के लोगों को भड़काने वाले छिद्दा नाम के व्यक्ति को क्षमा कर दिया।
- कोल्हापुर में सिद्धप्पा मुनिराज द्वारा उन पर पत्थर फेंकने वाले बच्चों को क्षमा कर देना।
- श्रुत सागर मुनि का मंत्रियों से विवाद, रात्रि में मंत्री मारने आये, कीलित हुये, प्रातः क्षमा।

2- गृहस्थों की क्षमा
- कृष्ण पर जरत्कुमार ने तीर चलाया, शीघ्र भाग जाने को कहा।
- रामचंद्र जी का मेघवाहन, कुम्भकर्ण को क्षमा करना।
- श्रीपाल ने धवल सेठ को क्षमा किया।

3- अन्यमतों की क्षमा
- गौतम बुद्ध ने जहर खिलाने वाले तक को अमर बनाया।
- द्रौपदी द्वारा अपने पुत्रों की हत्या करने वाले अश्वथामा को क्षमा करना।
- तुकाराम का गन्ने वाला उदाहरण
- एकनाथ द्वारा पीक थूकने वाले व्यक्ति को क्षमा करना।

7. क्षमा के भेद- मजबूरी की क्षमा (ताकतवर के साथ), स्वार्थ प्रेरित (दुकानदार की), वास्तविक।
8. क्षमा वीरों का आभूषण है, कायरों का नहीं। उबलते पानी में चेहरा नहीं दिखता।
9. क्षमावाणी मनाने का ढंग दिखावा मात्र है; जिनसे बैर है उनसे तो माँगते नहीं, अन्य से नाटक करते हैं। क्षमा बिन पांडित्य शून्य
- वक्ता का प्रमुख गुण धैर्यशाली हो।—

क्रोध बहने की चीज है

मुनि/कुम्भकर्ण,
क्रोध ने कुटेवो पर [illegible]

1. परिभाषा - कुलरूव जादि बुद्धिसु, तव सुद सीलेसु गारवं किंचि।
जो णवि कुव्वदि समणो, मद्दव धम्मं हवे तस्स ॥ - बारसाणुवेक्खा

उत्तमणाणपहाणो, उत्तमतवयरण करण सीलो वि।
अप्पाणं जो हीलदि, मद्दवरयणं भवे तस्स ॥ - कार्तिकेयानुप्रेक्षा

2. मार्दव का बाधक मान -
मान क्या है? :- अहं करोमीति अहंकार 2- दूसरों को तिरस्कार करने का भाव
3- दूसरों के गुणों को सहन न करने के भाव 4- दूसरों से ईर्ष्याभाव रखना 5- अनम्रता

3. मान की निःसारता - मैं कहीं नहीं पैदा नहीं हुआ। ऊँच नीच सब बना। अहंकार विपत्ति का मूल।

4. मार्दव की उपयोगिता - गुरु अनुग्रह, प्रभु वात्सल्य, विद्या प्राप्ति; सम्मान की प्राप्ति।

5. मान के 8 भेद - ज्ञानं पूजां कुलं जातिं बलमृद्धिं तपो वपुः। — चक्रवर्ती का घमण्ड
अष्टावाश्रित्य मानित्वं स्मयमाहुर्गतस्मयाः ॥ - रत्नकरण्डक श्रावकाचार (25)

6. मान के कारण- आदमी की दशा, अधिक परिग्रह- अधिक दुःखी, मनुष्य में मान की अधिकता,
वर्तमान की दशा (पीढ़ी की, प्रभु की, इत्यादि, दानी की)

7. मान से हानियाँ -
1- दिल पर बहुत बड़ा धक्का लगता है, जिससे व्यक्ति मानसिक अस्वस्थ हो जाता है।
2- अपनी बात रखने के लिए वह कुछ भी कर सकता है। (रावण मन्दोदरी संवाद)
3- दूसरों से कुछ प्राप्त करने से वंचित (राजा श्रेणिक सेठ जी से पेड़ झुकाने की विद्या नहीं सीख सके)

8. मान का फल — द्रौपदी का हँसना मजाक करने की सबसे बड़ी भूल है!
1- द्रौपदी ने नाक भी सिकोड़ी, बहुत ताप के पास पहुँचना पड़ा।
2- परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य। तत्त्वार्थसूत्र 6/25 नीच गोत्र का आस्रव होता है।
[illegible] ... मद के अभाव से [illegible] का आस्रव [illegible]
[illegible] सीता को वापिस नहीं किया। अंत में मरण हुआ।

9. मार्दव धर्म (विनय) लाने का उपाय-
1- निज गुणों व कमियों का परिचय [illegible] भाव का अभाव [illegible]
2- सदैव दूसरों के गुणों की प्रशंसा करें, किसी को तुच्छ न समझें। सबको सम्मान दें।
3- जिन्दगी में आपके प्रति जिस जिसने उपकार किये उनको दिन में एक बार स्मरण।
4- दूसरों की गलतियों की बजाय अपनी गलतियों पर ध्यान देवें।

10. मार्दव अमृत है संजीवनी है-
1- बनारसी दास जी ने चौकीदार को भाला मारने पर भी इनाम दिलाया।
2- जोशुआ की बोलचाल।
3- शिवसागर जी ने धर्मसागर जी को आचार्य बनाया।
4- आ. कुन्दकुन्द स्वामी ने अपना नाम नहीं लिखा, अजनमोहन जी ने अभिनन्दन ग्रन्थ नहीं लिखने दिया।

11. विनय के चार भेद- 1- दर्शन 2- ज्ञान 3- चारित्र 4- उपचार

12. कीर्ति सदैव कुँवारी है, जो उसे चाहते हैं उनके पास वह आती नहीं और जिनके पास वह आती है, वे उसे चाहते नहीं।

- मिटा दे अपनी हस्ती को, अगर कुछ मर्तबा चाहे।
कि दाना खाक में मिलकर, गुले गुलजार होता है ॥
- जो अपने को बेहतर शुमार करता है।
अजीब शख्स है अपना शिकार करता है ॥
- जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं।
प्रेम गली अति सांकरी जामें दो न समाहिं ॥
- मान वालों का नाम रहे न जिनके वंश।
तीनों को तुम देख लो रावण, कौरव, कंस
- मंजिल हमारे सामने थी, मुंतजिर मगर।
हम खुद ही अपनी राह में दीवार हो गए
- इस यौवन को पाकर क्यों, इतराते हो इतना
यह यौवन भी बुढ़ापे का, पैगाम लिये है

॥ [illegible] ॥
[illegible] से नहीं,
विनय से जीतो ॥

चतुर्थ

"वे कौन थे"

DAILY NOTES

वे कौन थे => 1. प्रतियोगिता के आवश्यक नियम

(क) यह प्रतियोगिता सभी व्यक्ति के लिए है इसलिए सभी व्यक्ति इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं।

(ख) आपको हमारे प्रश्न का जवाब पूर्ण वाक्य मे देना होगा।

(ग) जब आप प्रश्न का उत्तर देगे उसका निर्णय मैं स्वयं करूंगा।

प्रश्न उत्तर => 1. वे कौन थे जिनके ऊपर जलती सिगड़ी रखी गई थी - गजकुमार मुनिराज

2. वे कौन थे जिन्हें जलते हुए कड़े पहनाये गए थे - पंच पाण्डव

3. वे कौन थे जिन्हें मरणासन्न अवस्था में कुत्ते को णमोकार मंत्र सुनाया था - जीवन्धर कुमार

4. वे कौन थे जिन्होंने "आप्त परीक्षा नामक ग्रंथ लिखा - विद्यानन्द जी आचार्य

5. वे कौन थे जिन्हें हाथी पर बैठे बैठे वैराग्य हुआ था - राजा मधु

6. वे कौन थे जिन्होंने समयसार नाटक की रचना की थी - बनारसीदास

7. वे कौन थे जो णमोकार मंत्र की अवहेलना करने से सातवें नरक में गये - सुभौम चक्रवर्ती

8. वे कौन थे जिन्होंने यशोधर मुनिराज के गले में मृत सर्प डाला था - राजा श्रेणिक

9. वे कौन थे जिन्हें "भस्मक व्याधि रोग" हुआ था - समन्तभद्राचार्य

10. वे कौन थे जिन पर संवर नामक देव ने उपसर्ग किया था - पार्श्वकुमार मुनिराज

11. वे कौन थे जिन पर सीता के जीव ने उपसर्ग किया था - मुनि राम

12. वे कौन थे जिनका उपसर्ग राम-लक्ष्मण ने दूर किया - कुलभूषण-देशभूषण

13. वे कौन थे जो तीन पद धारी तीर्थंकर थे - शांतिनाथ, कुन्थुनाथ, अरनाथ

14. वे कौन थे जो विवाह के एक दिन बाद घर छोड़कर चले गये थे - जम्बूस्वामी

15. वे कौन थे जो नन्दा और सुनन्दा के ससुर थे - नाभिराय

16. वे कौन थे जिन्हें पशुओं को बंधन में देखकर वैराग्य हुआ - नेमिकुमार

17. वे कौन थे जिन्होंने त्रिलोकसार की रचना की - नेमिचन्द्राचार्य

18. वे कौन थे जिनकी अवगाहना 500 धनुष थी - राजा आदिनाथ

19. वे कौन थे जो एक वर्ष तक एक ही आसन पर खड़े रहे - मुनि बाहुबलि

20. वे कौन थे जो गुमानीराम के पिताजी थे - पंडित टोडरमल जी

21. वे कौन थे जिन्होंने तत्वार्थ राजवार्तिक ग्रंथ की रचना की - भट्ट अकलंक

22. वे कौन थे जिन्होंने कोटि शिला उठाई थी - लक्ष्मण

23. वे कौन थे जो विदेह क्षेत्र में सीमन्धर स्वामी के दर्शन को गए - आ. कुन्दकुन्द देव

24. वे कौन थे जो णमोकार मंत्र के प्रभाव से निरंजन हो गये - अंजन चोर

25. वे कौन थे जिनका जन्म सासनी में हुआ था - दौलतराम जी

26. वे कौन थे जिनको कोढ था उसे उन्होंने स्वयं दूर किया - वादिराज मुनिराज

27. वे कौन थे जिनको मुनिदीक्षा लेने के अन्तर्मुहूर्त में केवलज्ञान प्राप्त हुआ - भरत चक्रवर्ती

DATE DAILY NOTES

28. वे कौन थे जिनको ४८ तालो मे बन्द किया गया - मानतुंगाचार्य
29. वे कौन थे जिनको तीन दिन तक स्यालनी खाती रही - सुकुमार मुनि
30. वे कौन थे जिनके निमित्त से द्वारिका जली थी - द्वीपायन मुनिराज
31. वे कौन थे जो ज्ञानी होते हुये भी भाई की लाश को महीने तक कंधे पर रखे घूमते रहे - रामचन्द्र जी
32. वे कौन थे जिनका सिद्धचक्र के विधान से कुष्ठ रोग मिटा था - श्रीपाल
33. वे कौन थे जिन्होंने जैन धर्म का पहला ग्रन्थ लिखा - आचार्य पुष्पदंत एवं भूतबली
34. वे कौन थे जो राम की मृत्यु का समाचार सुन स्वयं भी मरण को प्राप्त हो गये - लक्ष्मण
35. वे कौन थे जिनका जन्म कारावास में हुआ था - श्री कृष्ण
36. वे कौन थे जिनका जन्म श्मशान घाट में हुआ था - जीवंधर स्वामी
37. वे कौन थे जिन पर सबसे अधिक उपसर्ग हुआ था - पार्श्वनाथ मुनिराज
(38) वे कौन थे जिनकी सबसे अधिक आयु थी - ऋषभदेव ...
39. वे कौन थे जिन्होंने बालक वर्धमान की सर्प बनकर परीक्षा ली थी - संगम देव
40. वे कौन थे जिन्हें हाथी के पैर के नीचे कुचलवा दिया था - पं. टोडरमल जी
41. वे कौन थे जिन्हें सूली पर चढ़ाया गया पर सिंहासन बन गया था - सुदर्शन सेठ
42. वे कौन थे जिन्हें एक बार में याद होता था - अकलंक देव
43. वे कौन थे जिन्होंने चोर को छत से जाने में सहायता की थी - पं. बनारसी दास
44. वे कौन थे जो इस युग के प्रथम दाता बने - राजा श्रेयांस
45. वे कौन थे जिन्होंने बैल को णमोकार मंत्र सुनाया था - पद्मरुचि सेठ
(46). वे कौन थे जिनका बाघ ने भक्षण किया था - सुकौशल मुनिराज
47. वे कौन थे जिन्होंने अपनी बहिन को कुदृष्टि से देखा और बाद में वैराग्य आ गया - देश-कुल...
48. वे कौन थे जिनके पांचों कल्याणक एक ही स्थान पर हुए - वासुपूज्य जी
49. वे कौन थे जिनके नाना व पिता एक ही थे - कार्तिकेय मुनिराज
50. वे कौन थे जिन्होंने ३६३ मिथ्या मत चलाये थे - मारीचि
51. वे कौन थे जो नरक गये और भविष्य में प्रथम तीर्थंकर होंगे - राजा श्रेणिक
52. वे कौन थे जो जुआ से प्रसिद्ध हुए - पाण्डव
(53) वे कौन थे जिन्हें प्रतिनारायण होते हुए भी तीसरे नरक का दुःख भोगना पड़ा - रावण
(54) वे कौन थे जो आचार्य पुष्पदंत एवं भूतबली के गुरु थे - धरसेनाचार्य
(55) वे कौन थे जिन्हें सीता का जीव प्रतीन्द्र नरक में संबोधन करने गया - लक्ष्मण
56. वे कौन थे जो इस अवसर्पिणी काल में अंतिम अनुबद्ध केवली कहलाए - जम्बू स्वामी
57. वे कौन थे जो इस अवसर्पिणी काल के अंतिम श्रुतकेवली हुए - आचार्य भद्रबाहु
58. वे कौन थे जो भविष्य काल मे सोलहवे तीर्थंकर होंगे। - श्री कृष्ण
59. वे कौन थे जो भविष्य काल में ... वे तीर्थंकर होंगे - ...
60. वे कौन थे जिन्होंने संस्कृत मे गद्यशैली का पहला ग्रंथ लिखा - आचार्य उमास्वामी

आस्था — चल छोड़ ये बता तू यहाँ कैसे?

जैस्मीन — मैं, मैं तो यहाँ शॉपिंग करने आई हूँ। मुझे बच्चों के लिए जीन्स व टी शर्ट खरीदने हैं। और उसके बाद शर्मा [illegible] भी जाना है। अच्छा ये तो हुई मेरी बात, अब ये तो बता तू यहाँ कैसे?

आस्था — मैं, मैं तो यहीं पास ही के मन्दिर में चलने वाली [illegible]शाला में बच्चे का नाम लिखवाने आ रही हूँ।

जैस्मीन — What पाठशाला! मैं तो ना भेजूं अपने बच्चों को [illegible]शाला, पाठशाला। मैं तो उन्हें अमेरिका पढ़ने के लिए [illegible] [illegible]गी।

[illegible] — अच्छा है।

[illegible] — चलो लक्ष्मी! पाठशाला का समय समाप्त हो जाएगा। फिर बालकों का उनके पाठ्य अवसर पर बने मन्दिर जा [illegible] जाना है।

[illegible] — ये आई बड़ी मन्दिर जाने वाली! बड़ी राम मन्दिर जाती [illegible] कहीं कि गंवार।

जैस्मीन — हाँ देख! तू मेरी बचपन की close friend है, आज [illegible] की बात कहती हूँ! मेरी मान तो तू अपने बच्चों को [illegible] शाला भेजकर उनका भविष्य मत बिगाड़!

[illegible] — ये तो आने वाला वक्त ही बताएगा जैस्मीन! कि कौन [illegible] भविष्य बिगाड़ रहा है, कौन किसका भविष्य सुधार [illegible]

[illegible] — चलो! ये तो भूले हुए भगवान है।

जैस्मीन — [illegible] चलती हूँ, मुझे पार्टी के लिए देर हो रही है।

1. [illegible] → [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

2. [illegible] → [illegible] [illegible] [illegible]

3. [illegible] → [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

4. [illegible] → [illegible] [illegible]

5. [illegible] → [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

6. [illegible] → [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

7. [illegible] → [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

8. [illegible] → [illegible] [illegible]

9. [illegible] → [illegible] [illegible] [illegible]

SHOT ON REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

11. [illegible] → [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

12. [illegible] → [illegible] [illegible] [illegible]

13. [illegible] → [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

14. [illegible] → [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

15. [illegible] → [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

16. [illegible] → [illegible] [illegible]

17. [illegible] → [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

18. [illegible] → [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

19. [illegible] → [illegible] [illegible] [illegible]

20. [illegible] → [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

What is my Full Form

उदाहरण - प. → अ. सि. आ. उ. सा.

परमेष्ठी → अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु

1. ध → क्ष. मा. आ. शौ. सं. स. त. त्या. आ. ब्र.
2. श. → मा. मि. नि.
3. क. → ग. ज. त. ज्ञा. मो.
4. नि. → नि. इ.
5. पु. → ध. अ. का. मो.
6. क्षे. → भ. है. ह. वि. र. है. ऐ.
7. ध्या. → आ. रौ. ध. शु.
8. प्र. → प. प्र.
9. चे. → ज्ञा. क. क.
10. मं.द्र. → छ. च. झा. क. पं. द. स्वा. ध्व.
11. क· → क्रो. मा. मा. लो.
12. प. → व्य. अ. उ.
13. र. → ख. मी. क. क. च.
14. आ. → सा. वं. र. प्र. र. ध्या.
15. दि. → पू. द. प. उ.
16. स्था. → त. अ.
17. नि. → का. म. पा. मा. शं. प. नै. पि. ना.
18. नि. → कौ. गि. च. पा. स.
19. म. → म. मां. म.
20. पं. → जी. पु. ध. अ. आ.

नोट - प्रश्न एवं उत्तर दोनों के प्रथम शब्द दिये है आपको उन्हें पूरा लिखना है।

हे भगवान ! आप नाराज क्यों हो। गए हैं कि इस जग बिल्कुल भी सीजन नहीं चल रहा है। अरे आपको चावल चढ़ा सकू इतनी भी कमाई नहीं हो रही। अरे जब हमें खाना खाने को नहीं मिलेगा तो हम आपको क्या चढ़ावें भगवान जरा दया करो आप तो दयानिधान हो हमारी दुकान अच्छी चलने लग जावे और अपने मजे हो जावें। भगवान तो फिर अपनी यह बात पक्की रही की अपने मजे तो आपके मजे। एक जोड़दार विधान (दशलक्षणविधान) कराऊंगा अब तो भगवन आपके ही भरोसे हैं।

रिश्वतखोर :

हे भगवान आप तो सर्वज्ञ हैं। मैंने जो अर्जी लगाई है। वो तो आप समझ ही गए होंगे न यदि समझे न हो तो भगवान मैं फिर से बता रहा हूँ कि मैं तो रिश्वत खोरी की के चक्कर में पकड़ा गया हूँ लोगों ने कह दिया है। मैंने लाख रू. की रिश्वत ली मगर राज की बात बताऊँ भगवान ली तो २ लाख की है पर आप ही इस झंझट। मुसीबत से छुड़ा सकते हो कोर्ट से बाइज्जत बरी हो गया तो आपको दूंगा आध ही 25%

10% चढ़ाऊंगा भी।

बेरोजगार :

4- इधर उधर देखते हुए।

वाह भगवान वाह ! आपके मंदिर में फर्श मार्बल का दीवारों पर ऑयल पेंट वेदी पर सोने का पेंट छत्र चंवर चांदी के आपका तो क्या कहना भगवान? अपरिग्रही भगवान के पास इतना परिग्रह। और एक मैं आपका भक्त बेरोजगार घूम रहा हूँ किसी को कहना मत भगवान ये पेंट भी मैंने दूसरों की पहिन रखी है। अरे भगवान कुछ तो सोचो हमारे बारे में हम जैसे बेरोजगारों पर कृपा करो बस एक छोटी सी नौकरी दिला दो भगवान पहली वेतन आपको ही चढ़ाऊंगा। ज्यादा क्या कहूँ भगवान। और तो आप समझ ही गए होंगे।

युवा :

5- तुमसे लागी लगन, ले लो अपनी शरण।
पारस प्यारा तुम तो करवा दो ब्याह हमारा ॥

हे पारसनाथ भगवान। मैं कब से रविवार का व्रत रख रहा हूँ। पर आप सुनते ही नहीं हो। मैं सब शादी की ही तो कह रहा हूँ। भगवान आपकी ही कृपा से चक्रवर्तियों की तो 96-96 हजार शादियां हो गई मेरी तो अभी एक भी नहीं हुई और आप मेरी एक शादी भी नहीं करवा सकते।